International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

आल्हा-एक ऐतिहासिक विश्लेषण

Manoj Thakur

Assistant Professor, Department of History, Govt. Ganesh Shankar Vidyarthi College Mungaoli, District Ashoknagar M.P.

सारांश (Abstract) –

यह शोध पत्र आल्हा पर केंद्रित है जो आल्हाखंड के केंद्रीय नायक हैं । शोध पत्र को मुख्य रूप से सात भागों में बांटा जा सकता है - प्रथम भाग में आल्हा के प्रारंभिक जीवन संबंधी विवरण जैसे ,उनका जन्म, बाल्यावस्था, नामकरण माता-पिता भाई इत्यादि का विवरण सम्मिलित किया गया है ।

दूसरे भाग में युवावस्था संबंधी प्रारंभिक विवरण जैसे - आल्हा ऊदल ने किस प्रकार बड़े होने के पश्चात अपने पिता तथा चाचा की हत्या का प्रतिशोध लिया ,सिरसा जीतने में मलखान की सहायता की, आल्हा का विवाह तथा पत्नी व पुत्र का परिचय ,आल्हा के प्रारंभिक कार्य , ऊदल, मलखान ,ब्रह्मानंद आदि भाइयों के विवाह करवाना, किस प्रकार अपने प्रिय भाई ऊदल से क्षणिक मतभेद हुआ, इत्यादि बिन्दु वर्णित हैं।

तृतीय भाग में माहिल की चुगली के कारण आल्हा ऊदल का महोबा से निष्कासन,महोबा छोड़कर कन्नौज जाकर बसना, राजा जयचंद की नौकरी करना, राजा जयचंद के विद्रोही सामंतों को पराजित कर उनसे लगान तथा हर्जाना वसूल कर राजा जयचंद को भेंट करना आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया है।

चतुर्थ भाग में जिन बिन्दुओं पर चर्चा हुई है वे इस प्रकार से हैं - पृथ्वीराज चौहान द्वारा आल्हा ऊदल की अनुपस्थिति में माहिल के भड़काने पर चंदेल राज्य पर आक्रमण करना, सिरसा को जीतने के बाद महोबे को घेरना, रानी मल्हना व परमाल द्वारा आल्हा को मनाने के लिए जगनिक को कन्नौज भेजना, जगनिक द्वारा आल्हा को मनाना, आल्हा का महोबे की सहायता के लिए तैयार होना, राजा जयचंद द्वारा आल्हा ऊदल के साथ अपनी सेना महोबा की सहायता के लिए भेजना ।

पांचवें भाग में आल्हा द्वारा महोबे की सहायता के लिए आना, पृथ्वीराज चौहान के साथ अंतिम निर्णायक युद्ध होना, दोनों पक्षों के अनेक योद्धाओं का मारा जाना, ऊदल का युद्ध में वीर गति प्राप्त करना,आल्हा का क्रोध करके युद्ध में पृथ्वीराज के सभी सेनानायकों का संहार कर डालना जैसे बिंदु वर्णित हैं।

छठवें भाग में आल्हा का पृथ्वीराज को मारने के लिए उद्धत होना, युद्ध भूमि में गुरु गोरखनाथ का आना, आल्हा को रोकना, आल्हा को वैराग्य उत्पन्न होना तथा गुरु गोरखनाथ के साथ वन को चले जाना जैसे बिंदु समाविष्ट किए गए हैं।

सातवें भाग में निष्कर्ष के रूप में आल्हा की जनसामान्य में स्मृति तथा ऐतिहासिकता से संबंधित विविध पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्द (Keywords) - आल्हाखंड, महोबा, भविष्य पुराण, माड़ोगढ़ , सिरसागढ़, देवी शारदा, बनाफर, माहिल, कन्नौज, जगनिक, ऐतिहासिकता,

परिचय(Introduction)-

आल्हा के नाम से बुंदेलखंड क्षेत्र में जनमानस भली भांति परिचित है । आल्हा के नाम को विशेष रूप से लोकप्रिय बनाने का श्रेय आल्हाखंड को दिया जाता है। आल्हाखंड एक अर्ध ऐतिहासिक ग्रंथ है जिसके केंद्र में पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारत के तीन राजपूत राजवंशों की प्रतिद्वंदिता है - दिल्ली अजमेर का चौहान राजवंश ,काशी बनारस क्षेत्र का गहड़वाल राजवंश तथा बुंदेलखंड क्षेत्र का चंदेल राजवंश। आल्हाखंड में प्रमुख रूप से आल्हा एवं ऊदल के वीरतापूर्ण कृत्यों का ओजस्वी शैली में वर्णन है।

आल्हाखण्ड का मूल कथानक 12 वी शताब्दी ईस्वी के आसपास का माना जाता है । यह मौखिक परंपरा के रूप में शताब्दियों से जनमानस के बीच लोकप्रिय रहा। तत्कालीन भाट चारणों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी इसको हस्तांतरित किया जाता रहा । इन भाट चारणों को प्रख्यात विद्वान कर्नल जेम्स टॉड द्वारा 'आदिम इतिहासकारों' की संज्ञा दी गई है।[1]

कैरिन शोमर (karine schomer) महोदय ने अपने ग्रंथ The idea of Rajasthan explorations in regional identity में आल्हा की कहानी को "कलि युग की महाभारत" कहा है। लोकप्रिय रूप से बुंदेलखंड क्षेत्र में भी यही मान्यता है।

अनेक विद्वानों ने आल्हाखण्ड को रामचरितमानस के पश्चात देश का सर्वाधिक लोकप्रिय लोक काव्य माना है, जिसे अत्यंत लगाव के साथ जनमानस द्वारा गया और सुना जाता है।

पारंपरिक रूप से आल्हाखण्ड का रचयिता जगनिक या जगनायक को माना जाता है।

आल्हा खंड का मूल ग्रंथ वर्तमान में अप्राप्त है। आल्हाखण्ड शताब्दियों तक मौखिक परंपरा के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहा।

मौखिक स्रोत एवं पारंपरिक आख्यान इतिहास का एक महत्वपूर्ण साधन होते हैं जिनकी पुष्टि पुरातात्विक व अभिलेखीय साक्ष्य से होने पर इतिहास में नवीन तथ्य प्रकाश में आते हैं । इसी क्रम में आल्हाखण्ड के नायक आल्हा की ऐतिहासिक गवेषणा अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक प्रतीत होती है ।

अपने इस शोध पत्र में मैंने आल्हाखंड के केंद्रीय पात्र तथा बुंदेलखंड क्षेत्र के सर्वप्रमुख लोक नायक आल्हा के जीवन एवं कृत्यों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। साथ ही आल्हा के संबंध में व्यवस्थित ऐतिहासिक विवेचन भी शोध पत्र में किया गया है।

आल्हा - आल्हाखण्ड की भूमिका में दिए विवरण के अनुसार जब द्वापर युग में महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया तब भीम आदि अनेक योद्धाओं ने श्रीकृष्ण से कहा कि उनकी और युद्ध करने की इच्छा है । तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि आपकी यह इच्छा कलयुग में पूर्ण होगी । इसी कारण से महाभारतकालीन वीरों का कलयुग में पुनर्जन्म हुआ। युधिष्ठिर ने आल्हा , भीमसेन ने ऊदल, सहदेव ने मलखान, अर्जुन ने चंदेल शासक परमाल के पुत्र ब्रह्मा , नकुल ने कन्नौज के लाखन के रूप में जन्म लिया। इसी प्रकार दुर्योधन ने पृथ्वीराज, करण ने ताहर, द्रोणाचार्य ने चौड़ा ब्राह्मण, दुशासन ने धांधू, द्रौपदी ने बेला तथा अभिमन्यु ने इंदल के रूप में जन्म लिया।[2]

इस संदर्भ में आल्हाखण्ड के विभिन्न संस्करणों तथा अन्य ग्रंथों में भिन्नता देखने को मिलती है।

भविष्य पुराण के तीसरे खंड प्रतिसर्ग पर्व में इससे संबंधित विवरण प्राप्त होता है जिसके अनुसार भगवान शंकर के श्राप से महाभारत कालीन योद्धाओं का पुनर्जन्म कलयुग में हुआ। इसमें आल्हा को विष्णु अंश तथा ऊदल को कृष्ण अंश बताया गया। युधिष्ठिर का पुनर्जन्म बलखानि (मलखान) के रूप में बताया है जो शिरीष नामक नगर (सिरसा) का शासक होगा । भीम का पुनर्जन्म बीरन के रूप में, अर्जुन का पुनर्जन्म ब्रह्मानंद के रूप में ,नकुल का पुनर्जन्म लक्षण (लाखन) नाम से, सहदेव का पुनर्जन्म देव सिंह नाम से होना बताया गया है। इस कथा में धृतराष्ट्र के अंश से पृथ्वीराज का जन्म ,द्रोपदी का पुनर्जन्म बेला के रूप में, करण का तारक (ताहर) के रूप में पुनर्जन्म होना बताया गया है।[3]

जैसा कि नाम से सूचित होता है आल्हा आल्हाखंड के केंद्रीय व्यक्तित्व हैं । आल्हा के जन्म के विषय में आल्हाखंड में वर्णन है कि इनके पिता का नाम दस्सराज (देशराज) तथा माता का नाम देवकुंवरि (देवी, दिवला, धावलि) था। जन्म के समय ज्योतिषियों ने बताया था कि सिंह लग्न में जन्म होने के कारण यह बालक राजाओं पर सिंह के समान गरजेगा ।[2]

प्रतिवर्ष आल्हा की जयंती आज भी मनाई जाती है जो जनमानस में उनकी अमर ख्याति का एक सशक्त उदाहरण है।

जब आल्हा बहुत छोटे थे तथा ऊदल अपनी माता के गर्भ में थे तभी माड़ोगढ़ के राजकुमार करिंघा राय द्वारा धोखे से आल्हा ऊदल के पिता दस्सराज तथा चाचा बच्छराज की हत्या कर दी गई थी।

कालांतर में जब आल्हा ऊदल बड़े हुए तो अपने पिता तथा चाचा की हत्या का रहस्य माहिल की चुगली के कारण उन्हें ज्ञात हो गया। इसके पश्चात आल्हा- ऊदल ने मलखान व अन्य सेनानायकों के साथ माड़ोगढ़ पर आक्रमण कर अपने पिता तथा चाचा की हत्या का प्रतिशोध लिया।

माड़ोगढ़ में अपने पिता तथा चाचा की हत्या का बदला लेने के बाद आल्हा ऊदल ने अपने चचेरे भाई मलखान की सिरसागढ़ जीतने में सहायता की । सिरसागढ़ चंदेल शासक परमाल द्वारा मलखान के पिता बच्छराज को दिया गया था । मलखान के पिता की हत्या के पश्चात चौहानों ने सिरसागढ़ पर अधिकार

कर लिया था जिसे मलखान ने उन्हें आल्हा ऊदल की सहायता से पुनः जीत लिया।

आल्हा पश्चावद नामक हाथी तथा करिलिया नमक घोड़े पर सवार होता था। आल्हा का विवाह नैनागढ़ की राजकुमारी सुनवा(सुलक्षणा) से हुआ था। मान्यता अनुसार चुनार स्थित वर्तमान सोनवा मंडप ही वह स्थान है जहां आल्हा एवं सुनवा का विवाह संपन्न हुआ था।

सुनवा का एक अन्य नाम आल्हाखंड में मछला भी दिया गया है। आल्हा व सुनवा का इंदल नाम का सुंदर पुत्र हुआ था।

इसके पश्चात आल्हा ने ऊदल का विवाह नरवरगढ़ में ,मलखान का विवाह पथरीगढ़ में तथा ब्रह्मानंद का विवाह दिल्ली में अपने पराक्रम के बल पर करवाने में सफलता पाई थी ।

आल्हा ने अपने जीवन में सदैव धर्मानुकूल आचरण किया था, कभी भी छल कपट अथवा अधर्म का सहारा नहीं लिया था।

आल्हा अपने भाई ऊदल पर विशेष स्नेह रखते थे। केवल एक अवसर पर आल्हा ने ऊदल को दंडित करने का आदेश दिया था, जब माहिल की चुगली व झूठी शपथ लेने (गंगा उठाने)पर आल्हा को यह भ्रम हो गया था कि ऊदल ने आल्हा के बेटे इंदल का वध कर दिया है। इस एक उदाहरण के अतिरिक्त दोनों भाइयों में अटूट प्रेम था।

आल्हा के गुरु का नाम आल्हाखंड में गुरु अमर तथा गुरु गोरख बताया गया है। आल्हा ने देवी शारदा की कठोर आराधना की थी। किंवदंती अनुसार देवी ने उन्हें अमरता का वरदान दिया था।

आल्हा को रणभूमि में कोई भी पराजित नहीं कर पाया। आल्हाखंड में आल्हा को शांत स्वभाव का बताया गया है परंतु क्रोध आने पर उनको रोक पाना असंभव था। हालांकि आल्हा अनावश्यक हिंसा को अच्छा नहीं मानते थे -

" नाहक हिंसा हम करिहैं ना, मरिहैं जीव जंतु अधिकाय" [4]

एक अन्य विवरण के अनुसार आल्हा बनाकर जाति के दशरथ का पुत्र था जिसने बचपन में एक बार पृथ्वीराज चौहान व अन्य राजाओं की महमूद गजनबी के विरुद्ध सहायता की थी । [5]

एक विवरण के अनुसार बंगाल प्रदेश के तत्कालीन राजा मानजू ने जब मिथिला के राजा ब्रह्मादेव पर आक्रमण किया तो आल्हा ने ब्रह्मादेव का साथ देकर उसे पराजित होने से बचाया इसीलिए आल्हा को मदराख (मद या मान की रक्षा करने वाला) कहा गया। [5]

एक अन्य विवरण अनुसार बताया गया है कि बनाफर वंश के दस्सराज-बच्छराज के वीर पुत्र आल्हा, ऊदल व मलखान महाराज परमाल के प्रमुख सेनानायक थे। [6]

एक बार महोबा से कालिंजर जाते समय परमाल के सेनानायक आल्हा ऊदल ने तेज घोड़ों की सहायता से हिरणों का शिकार किया । राजा परमाल ने इस तेज गति की सराहना की किंतु माहिल ने उक्त प्रसंग का

आश्रय लेकर राजा परमाल को भड़काया कि तेज गति से चलने वाले घोड़े जो आल्हा ऊदल के पास है उनको तो राजा के पास होना चाहिए-

"अल्हन हय दौराय के मारे हैं मग धाय,
ऐसे उनके पांच हैं नृप के एकौ नाय" [6]

माहिल के उकसावे में आकर परमाल ने आल्हा से उनके तेज गति से चलने वाले पांच घोड़े मांग लिए। जैसा कि अपेक्षित था , आल्हा ऊदल ने घोड़े देने से इनकार कर दिया राजा। परमाल ने क्रोध में आकर आल्हा ऊदल को देश निकाले का दंड दे दिया। चंद्रवरदाई कृत पृथ्वीराज रासो में भी इसी प्रकार का विवरण हमें प्राप्त होता है।

महोबे से निकल जाने पर आल्हा ऊदल ने कन्नौज के राजा जयचंद के पास जाने का निर्णय लिया मार्ग में उन्होंने कुरहट के राजा हरसिंह विरसिंह को हराकर उनसे धनराशि वसूली। [6]

राजा परमाल द्वारा महोबे से निकल जाने का आदेश दिए जाने पर आल्हा ऊदल ने अपने परिवार सहित महोबे को त्यागने का निर्णय लिया।

जब आल्हा ऊदल के महोबा छोड़कर जाने की सूचना रानी मल्हना को प्राप्त हुई तो उन्होंने आल्हा ऊदल को महोबा ना छोड़ने की बात कही । किंतु आल्हा ऊदल ने मल्हना को समझाया की राजा परमाल का आदेश हमें मानना होगा।

हालांकि ऊदल ने शिकायत भरे स्वर में मल्हना से कहा कि हमने राजा का क्या बिगाड़ा था जो उन्होंने भादौ के महीने में हमें महोबा से निकल जाने का आदेश दिया है -

बोले ऊदन तब मल्हनाते ,नाही कछु हमारी लाग।
भादौ चिरैया ना घर छांड़ै, ना बनिजार बनिज को जाएं।
काह बिगारो हम राजा को, जो भादौ में दियो निकारि।[2]

अंततः मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए आल्हा ऊदल अपने परिवार तथा सैनिकों सहित कन्नौज पहुंच जाते हैं।

माहिल की चुगली पर जब चंदेल शासक परमाल ने आल्हा ऊदल को महोबा से निकाल दिया था तो आल्हा ऊदल ने राजा जयचंद के यहां नौकरी कर ली थी।

आल्हाखंड के अनुसार राजा जयचंद ने एक दिन अपनी राजसभा में घोषणा की थी कि उसके अधीनस्थ गांजर क्षेत्र से बारह वर्ष से लगान इकट्ठा नहीं किया जा सका है, जो भी वीर योद्धा हो वह इस कार्य को करने के लिए आगे आए। इस कठिन क्षेत्र से लगान वसूल करना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य था । इसलिए जयचंद के किसी भी सरदार द्वारा इस कार्य को करने की हामी ही नहीं भरी गई। तब क्रोधित होकर ऊदल ने राज्यसभा में रखा हुआ बीड़ा उठाते हुए यह घोषणा की कि वे इस कार्य को करेंगे।

गांजर क्षेत्र में आल्हा ऊदल को राजा जयचंद के अनेक विद्रोही सामंतों से युद्ध करना पड़ा। सबसे पहले बिरियागढ़ के शासक हिरसिंह को आल्हा ऊदल ने पराजित करके अधीन कर लिया । फिर पट्टी के राजा सातनि , कामरू के राजा कमलापति, बंगाले के गोरखा राजा , कटक आदि के राजा (जिंसी का राजा जगमनी ,कटक के राजा मुरली व मनोहर , रूसनी का राजा चिंता ठाकुर, गोरखपुर का राजा सूरज ठाकुर, पटना का राजा पूरन ,काशी का राजा हंसामनि आदि) को पराजित किया । इस प्रकार आल्हा ऊदल ने 3 महीने और 13 दिन तक गांजर क्षेत्र में लगातार युद्ध करके बारह विद्रोही प्रवृत्ति के राजाओं को कैद करके राजा जयचंद के दरबार में प्रस्तुत किया था।

तीनि महीना औ तेरह दिन, गांजर खूब कीन तलवार।
बारह राजन को कैदी कर, पठवा जयचंद के दरबार।[4]

राजा जयचंद ने प्रसन्न होकर आल्हा- ऊदल को कन्नौज के निकट रायकोट नामक स्थान निवास हेतु दिया था , ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार चंदेल शासक परमाल ने दस्सराज व बच्छराज को निवास हेतु महोबा के समीप दशहरपुरवा व सिरसा दिया गया था।

आल्हा ऊदल की महोबा से अनुपस्थिति पर महिल ने पृथ्वीराज को उकसाकर महोबा पर आक्रमण की सलाह दी ।

पृथ्वीराज द्वारा महोबा पर आक्रमण की खबर पर रानी मल्हना की सलाह पर जगनिक को परमाल द्वारा कन्नौज भेजा गया ताकि आल्हा को मना कर महोबा वापस लाया जा सके ।

ज्ञानी कवि रचित वीर विलास में इस घटना का अत्यंत मार्मिक विवरण प्राप्त होता है। जिसमें रानी मल्हना अपनी दशा को द्रोपदी के समान बतलाकर आल्हा को मनाकर लाने के लिए कहती हैं-

द्रौपदी कैसी दशा अब होत है, श्री करुणानिधि को कह पैयै ।
की अब मैं जग जोगनी होति हौ, की जगनायक आल्ह मनैयै।
कीरत सागर पार माल्हन पहुंचाबन गई,
असुवन भ दृग लाल,आल्ह ल्याइयौ हाल ही । [7]

इस प्रकार मल्हना के मार्मिक संदेश व जगनिक के समझाने पर आल्हा ऊदल महोबा की रक्षा हेतु आने पर सहमत हुए । हालांकि प्रारंभ में दोनों भाई परमाल द्वारा किए गए दुर्व्यवहार के कारण महोबा जाने के लिए तैयार नहीं थे परंतु अपनी माता देवी (दिवला) द्वारा समझाये जाने तथा मातृभूमि पर आए संकट के कारण आल्हा ऊदल ने महोबा की रक्षा हेतु जाने का निर्णय दिया था ।

जयचंद ने भी आल्हा ऊदल की सहायता हेतु अपने भतीजे राणा लाखन राणा गुलाब सहित 32 सेनानायक साथ में भेजे थे ।[5]

चौहान-चंदेल सेना के मध्य निर्णायक युद्ध उरई के नजदीक हुआ।[8]

युद्ध के पूर्व दोनों सेनाओं का अवलोकन करने के बाद परमाल ने भयभीत होकर अपने सेनानायक आल्हा से स्वयं को युद्ध क्षेत्र से हटाने की इच्छा प्रकट की । आल्हा ने परमाल को युद्ध क्षेत्र से दूर कालिंजर के किले में सुरक्षित रूप से पहुंचा दिया । [5]

आल्हा ऊदल व ब्रह्मा के नेतृत्व में चंदेल सेना ने भयानक युद्ध करते हुए चौहान सेना को भारी क्षति पहुंचाई। भीषण युद्ध में दोनों ओर के अनेक योद्धा वीर गति को प्राप्त हुये।

आल्हा खंड के विवरण के अनुसार अंतिम युद्ध में जब आल्हा ने ऊदल के मारे जाने का समाचार सुना तो अत्यधिक क्रोध करके पृथ्वीराज की सेना का संहार कर डाला ।

जब आल्हा ने पृथ्वीराज को मारने के लिए अपना खड्ग (खांडा) उठाया तभी गुरु अमरा (गुरु गोरख) ने आकर आल्हा का हाथ पकड़ लिया । गुरु गोरख आल्हा को पृथ्वीराज को छोड़ने के लिए मना लेते हैं, इसके बाद आल्हा गुरु के साथ संसार त्याग कर वन को चले गए ।

हाथ पकरिलौ तब गोरख ने, आल्हा मानो बात हमारि।
छोड़ देउ तुम पृथ्वीराज को, वन को चलो हमारे साथ। [2]

कुछ इसी प्रकार का वर्णन चंदवरदाई के पृथ्वीराज रासो से प्राप्त होता है -

आल्ह चले तजि समर को, छांड़ि भोग को वास ।
गोरख संगी हुई चले, किए निरंञ्चन आस । [2]

हालांकि अनेक इतिहासकार आल्हा खंड में वर्णित उक्त घटनाक्रम से असहमति व्यक्त करते हैं। उनके अनुसार चौहान चंदेल संघर्ष में परमर्दिदेव की ओर से लड़ते हुए आल्हा व ऊदल नामक सेनानायकों ने वीरगति पाई थी ।[9]

पृथ्वीराज चौहान के साथ आल्हा ऊदल के युद्ध के परिणाम के विषय में एक लोकोक्ति जनसामान्य में प्रचलित है-

'खेत पिथौरा तलवार आल्हा उदल का'

अर्थात जीत पृथ्वीराज चौहान को प्राप्त हुई किंतु यश व गौरव आल्हा ऊदल को प्राप्त हुआ। [10]

निष्कर्ष (Conclusion)-

आल्हा ऊदल अपने समय के सर्वश्रेष्ठ योद्धा थे जिनकी ख्याति बुंदेलखंड की सीमाओं के पार दूर-दूर के क्षेत्रों में भी फैली। [11]

पृथ्वीराज चौहान द्वारा चंदेल राज्य पर किए गए अभियान के अभिलेखीय साक्ष्य भी उपलब्ध हैं । मदनपुर के शिव मंदिर से प्राप्त तीन अभिलेख इस संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं । यह अभिलेख विक्रम संवत 1239 (1182 ई) के हैं। प्रथम अभिलेख के अनुसार चंदेल शासक परमर्दी के राज्य पर पृथ्वीराज द्वारा धाबा बोला गया । द्वितीय अभिलेख पृथ्वीराज के गौरवपूर्ण कृत्यों का वर्णन करता है

इसी अभिलेख में उसे अर्णोराज का पौत्र तथा सोमेश्वर का पुत्र बताया गया है। तीसरे अभिलेख में भगवान शिव के विभिन्न नामों का उल्लेख किया गया है । [8]

आल्हाखण्ड की ऐतिहासिकता की पुष्टि इस तथ्य से भी की जा सकती है कि अनेक ऐतिहासिक ग्रंथों में इससे संबंधित विवरण हमें प्राप्त हो जाते हैं। उदाहरण के लिए पृथ्वीराज रासो के कैमास करनाटी प्रसंग में आल्हा से संबंधित विवरण प्राप्त होते हैं।[12]

भविष्य पुराण में भी आल्हाखण्ड के विभिन्न पात्रों का विवरण हमें रोचक ढंग से प्राप्त होता है।[3]

झांसी जिले के मदनपुर मंदिर के अभिलेख से सिद्ध होता है कि संवत 1235 विक्रम (1178) ई में आल्हा वर्तमान थे। मदनपुर को चंदेल राजा मदन बर्मन ने बसाया था। इस गांव के मंदिर पर लगे शिलालेख की पंक्ति है - "ओ. सं. 1235 श्रावण वदि । विकोर पथ के महाराज पुत्र श्री आल्हनदेव श्री आदित्य मासे प्रति दत्त।"[7]

इसी प्रकार महाराजा छत्रसाल ने अपने पुत्र जगत राज को संवत 1786 (1729 ई.)में लिखें एक पत्र में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि उन्होंने अपने गुरु प्राणनाथ के आदेश पर आल्हा की गढ़ी की खुदाई कराई जिसमें उन्हें आल्हा ऊदल के घोड़े की सोने की करवारी (लगाम) मिली थी । उक्त पत्र में महाराजा छत्रसाल ने यह भी लिखा है कि वहां से 73 लाख का धन , बहुत से हथियार भी मिले थे जो उनके (महाराजा छत्रसाल के) पास उस समय थे।[7]

मध्य प्रदेश के छतरपुर स्थित आदिनाथ जैन मंदिर में प्राप्त एक अभिलेख के एक पाठ (reading)के आधार पर ऐसा दावा किया जाता है कि इस अभिलेख में आल्हा ऊदल व उनके अन्य साथियों का उल्लेख किया गया है। हालांकि इस पाठ को सभी विद्वान स्वीकार नहीं करते हैं। इसी प्रकार राजा परमाल के अनेक अभिलेख हमें प्राप्त हो चुके हैं जिनमे कालिंजर के नीलकंठ मंदिर से प्राप्त शिलालेख उल्लेखनीय है।[6]

आल्हा की ऐतिहासिक विवेचना के संदर्भ में डॉक्टर गंगा प्रसाद गुप्त बरसैया जिन्होंने ज्ञानी जू वीर विलास के संपादन का कार्य किया है, का वक्तव्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा था कि विद्यार्थी काल से ही आल्हा पर शोध करना चाहते थे, क्योंकि इस लोक काव्य में ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से मूल्यवान तत्वों की बहुलता है। वह कहते हैं कि भले ही आल्हा में अनेकश: अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण व प्रतीकों की बहुलता हो ,परंतु तब भी इसे पूरी तरह से अस्वीकार करना इतिहास और जीवन साहित्य दोनों के दृष्टिकोण से घोर अन्याय होगा। [7]

बुंदेलखंड क्षेत्र के जन सामान्य में आल्हा की अमिट छवि अंकित है। आज भी जनसामान्य द्वारा ऐसा विश्वास किया जाता है कि आल्हा जीवित हैं। इस संदर्भ में आल्हा की आराध्य देवी मैहर की शारदा माता के संबंध में लोकमान्यता प्रचलित है कि आल्हा आज भी यहां माता की पूजा करने आते हैं। हालांकि इन

[i]लोकमान्यताओं की पुष्टि करना संभव नहीं है किंतु इनसे इस क्षेत्र में आल्हा की व्यापक स्वीकार्यता एवं लोकप्रियता की पुष्टि अवश्य होती है।

आल्हा से संबंधित अनेकों स्थल बुंदेलखंड क्षेत्र में विद्यमान है जो लोकमान्यता अनुसार आल्हा ऊदल की क्रीड़ा स्थली रहे थे।

इन स्थलों में प्रमुख है- महोबा, कालिंजर, कन्नौज, नरवर,मदनपुर, जाजमऊ, मनियागढ़ इत्यादि।

इसी प्रकार लोकमान्यता के अनेक प्रसंगों में आल्हा का उल्लेख किया जाता है, जिसमें प्रमुख रूप से भादों के महीने में आने वाले कजलियों(भुजरियों) के त्यौहार का उल्लेख किया जा सकता है। इस त्यौहार के अवसर पर ही प्रसिद्ध कजलियों की लड़ाई हुई थी । यह प्रसंग जनमानस में अत्यंत लोकप्रिय है।स्पष्ट है कि लोक मान्यताओं में आल्हा अनवरत रूप से विद्यमान हैं।

संदर्भ:-

1. James Tod ,Annals and antiquities of Rajasthan for the Central and western rajput states of India, vol I humphrey milford Oxford University press ,London, 1920
2. पंडित नारायण प्रसाद सीताराम जी, आल्हाखंड, मुद्रक और प्रकाशक- खेमराज श्रीकृष्णदास श्री वेंकटेश्वर प्रेस, मुंबई, संस्करण नवंबर 2021 पृष्ठ क्रमांक 10, 28, 458,821,918)
3. [i] भविष्य पुराण, गीता प्रेस गोरखपुर
4. पंडित ललित प्रसाद मिश्र,आल्हा खंड, तेज कुमार प्रेस लखनऊ, 1952, पृष्ठ क्रमांक 260,407
5. गोरेलाल तिवारी, बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास, प्रकाशक के. मित्रा, द इंडियन प्रेस, इलाहाबाद,1933 पृष्ठ क्रमांक 53,57,59
6. रामचरण हयारण, बुंदेलखंड की संस्कृति और साहित्य, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, 1969 पृष्ठ क्रमांक 21, 22, 23
7. गंगा प्रसाद गुप्त बरसैयां ,वीर विलास (ज्ञानी कवि), वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 1992 ई. पृष्ठ क्रमांक 20,27
8. Ram Vallabh Somani, Prithviraj Chauhan and his times, published by Publication scheme Jaipur, 1981,पृष्ठ क्रमांक 48
9. के सी श्रीवास्तव ,प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति, पृष्ठ क्रमांक 596
10. Charles Alfred Elliott, The chronicles of Oonao .a district in Oudh, Allahabad Mission press Allahabad, 1862 ,पृष्ठ क्रमांक 23
11. D.L. Drake Brockman ,Hamirpur : A Gazetteer, Volume XXII of the District Gazetteer of the United provinces of Agra and Oudh, Printed by F.Lukar, Superintendent, Government Press,United Provinces, Allahabad,1909, पृष्ठ क्रमांक 132
12. पृथ्वीराज रासो संपादक मोहनलाल विष्णु लाल पांडे श्यामसुंदर दास